कामायनी का केन्द्रगत संदेश केवल हृदय तथा बुद्धि के संयोजन पर बल देना है। कामायनी में मनु को आनन्द की अनुभूति कराने में श्रद्धा तथा इड़ा दोनों का योग है। श्रद्धा अपनी समस्त सद्भावनाओं के बावजूद मनु को बिना इड़ा की सहायता से आनन्द की प्राप्ति नहीं करा सकी। आलोचकों द्वारा श्रद्धा को हृदय तथा इड़ा को बुद्धि का प्रतीक माना गया है। केवल इच्छा से मनुष्य कर्म में लिप्त नहीं हो पाता और, मात्र बुद्धि से मनुष्य कर्म में तो प्रवृत्त होता है लेकिन उस कर्म से उसे सन्तोष नहीं मिल पाता —

इच्छा, क्रिया एवं ज्ञान का समन्वय आनन्द प्राप्ति के लिए आवश्यक है। श्रद्धा को यदि केवल इच्छा का प्रतीक माना जाय और इड़ा को क्रिया एवं ज्ञान का तो भी दोनों के अलग रहने पर आनन्द की प्राप्ति असम्भव है। श्रद्धा की समस्त सद्भावनाओं के बावजूद मनु अतृप्त रहते हैं और इड़ा के साथ कर्म में प्रवृत्त होकर भी संतुष्ट नहीं हो पाते। समरसता के लिए हृदय और बुद्धि का सम्मिलन अनिवार्य है।

श्रद्धा और इड़ा - दोनों मानवीय संस्कृति के कल्याणार्थ मनु को कर्म में नियोजित करती हैं।

जोशीजी के अनुसार कामायनी की रचना मानव के आनन्द की प्राप्ति की आकांक्षा की तृप्ति के लिए की गयी है। कामायनी इतिहास, रूपक एवं कवि कल्पना से मिश्रित एक ऐसी सुन्दर काव्यकृति है, जिसमें आदिमानव मनु के माध्यम से संस्कृति का संचरण दिखाते हुए अन्त में आनन्दलोक की व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। मनुष्य में आनन्द प्राप्ति की सहज आकांक्षा पायी जाती है, किन्तु इसकी प्राप्ति के साधन का उसे पता नहीं होता एवं वह आनन्द का पर्याय सुख को मानकर मनु की भाँति सोचता है :

विश्व माधुरी जिसके सम्मुख मुकुर बनी रहती हो,
वह अपना सुख स्वर्ग नहीं है, यह तुम क्या कहती हो।

'कामायनी' का समस्त मानवता के लिए संदेश है :

शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त,
विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय।
समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय।

श्रद्धा का यह उद्बोधन केवल मनु के लिए नहीं, वरन मानव मात्र के लिए है। श्रद्धा काव्य का ऐसा चरित्र है, जिसे यह विदित है कि मानवता को विजयिनी बनाने के लिए अहम का परिशमित होना नितान्त आवश्यक है। बिना इसके मनुष्य इस व्यापक मानवतावाद के महत्त्व को नहीं समझ सकेगा — अपने सुख को विस्तृत कर लो
सब को सुखी बनाओ।

कवि ने एकाएक आनन्दलोक का वर्णन नहीं कर दिया, बल्कि उसके लिए सम्पूर्ण काव्य में विविध संदर्भों में श्रद्धा, इड़ा एवं क्रिया द्वारा मनु के अदम्य अहं को परिशमित कर उचित दिशा देने का प्रयास किया गया है। जीवन के आरंभ में मनु के आत्मविश्वास की कमी है :

कहा मनु ने नभ धरणी बीच,
बना जीवन रहस्य निरुपाय।